५. बर्फ की धरती

मौलिक सृजन

बर्फीले प्रदेशों के चित्रों का कोलाज तैयार कीजिए :–

–कृष्णा सोबती

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से चित्रों का संग्रह करवाएँ । ● उन चित्रों पर पाँच वाक्य बोलने के लिए कहें । ● गुट बनाकर कोलाज बनवाएँ ।

ऊपर निर्मल-उजला आकाश, नीचे चाँद की-सी धरती और उसपर चलती मैं-इस विशाल दृश्य का हिस्सा । मैं मन ही मन ऋचाओं के भावलोक को दोहराने लगती हूँ ।

धरती और आकाश की परिक्रमा करते सात घोड़ोंवाले रथ में तेजस्वी सूर्य। यशस्वी सूर्य, हिमालय के शिखरों पर सदा-सदा चमकतें रहें । हमें अपनी ऊर्जा से भरते रहें । मैं उषा काल में इस पर्वतीय धरती पर चलते हुए ऋषियों के कुछ शब्द, कुछ पंक्तियाँ मूल में गुनगुनाना चाहती हूँ पर कुछ भी कंठस्थ नहीं । मैं खामोशी से मन ही मन कुछ अपना ही गुनगुनाती हूँ ।

तीन लोक-माना जाता है कि देवताओं के लोक का रंग श्वेत है । धरती पर मानवीय लोक का रंग लाल है । थल के नीचे, पानी का पाताललोक नीले रंग का है । अजीबों-गरीब जगह है । भारत का यह टुकड़ा लद्दाख । उजली-तीखी धूप और घाटी के पेंदें में सुनसान इलाकों के विस्तार फैले पड़े हैं । तरह-तरह के रंगो की चट्टानें । मटमैली, स्लेटी, तांबई और रेतीली भी ।

लद्दाख कई नामों से जाना जाता है-मारयुल, लाल धरती, मांगयुल । बहुत से लोगों का घर, खाछांन-पा अर्थात बर्फ की धरती ।

इतिहासकारों के मत के अनुसार प्रसिद्ध चीनी यात्री ने इस प्रदेश का जिक्र इसी नाम से किया है । इसे बुद्ध का कमंडल भी कहा जाता है ।

एक और सार्थक और सुंदर नाम है लद्दाख का-बुद्धथान । बौद्ध विहार, गोपाओं को देखकर मुझे यह नाम बहुत भाया ।

खारदूलांग-सुबह नाश्ते के लिए ड्रीमलैंड पहुँची । खाना शुरू ही किया था कि टूरिस्ट विभाग के साहिब खारदूलांग के लिए मेरा परमिट ले आए ।

''मैम, गाड़ी बाहर खड़ी है । आप जाने के लिए कितना वक्त लेंगी ?''

''सिर्फ दस मिनट । हाँ, लैंडरोवर में हम लोग कितने होंगे ?''

''तीन ! - आप, मैं और ड्राइवर साहिब ।''

''नाश्ता लें, हम बाहर इंतजार कर रहे हैं ।''

हमने नाश्ता खत्म किया और लंच के लिए तीन पराठे और तीन आमलेट ऑर्डर किए । थरमस में पानी भरवाकर हम खारदूलांग के लिए निकले । शहर से बाहर निकलते-निकलते जैसे पहाड़ों की शृंखलाएँ दूर पर दूर होती गईं ।

लेह से खारदूलांग ग्लेशियर से पानमिक होते हुए काराकोरम तक पहुँचा

परिचय

जन्म : १८ फरवरी १९२५ गुजरात (अविभाजित भारत)

परिचय : हिंदी लेखन के क्षेत्र में सोबती जी एक जाना-माना नाम है। आख्यायिका, कहानी, निबंध, उपन्यास आदि को आपने विलक्षण ताजगी दी है ।

प्रमुख कृतियाँ : डार से बिछुड़ी (कहानी संग्रह), तिन पहाड़ (यात्रा विवरण), सूरजमुखी अंधेरे के (उपन्यास), शब्दों के आलोक में (रचनात्मक निबंध), हमदशमत (संस्मरण) आदि ।

गद्य संबंधी

यात्रा वर्णन : इसमें अपने द्वारा किए गए किसी पर्यटन की अपनी अनुभूतियों, प्रकृति, कला का निरीक्षण, स्थान की विशेषताओं आदि का लगावपूर्ण वर्णन किया जाता है ।

प्रस्तुत पाठ में सोबती जी ने लद्दाख के प्राकृतिक सौंदर्य का बहुत ही सूक्ष्म वर्णन किया है ।

जा सकता है ।

एकाएक लैंडरोवर रुकी पहाड़ के निर्जन वीराने में एक तंबू के सामने । ड्राइवर साहिब ने परमिट दिखाया, रजिस्टर में एंट्री की और गाड़ी सन्नाटों को चीरती चढ़ाई पर सरकने लगी ।

काश ! परमिट चेक करने की ड्युटी मेरे पास होती । मैं मुस्तैदी से उसे निभाती और अपनी सोच को भी कागज पर उतारकर ढंग से अंजाम देती । इस एकाकी में टूरिस्ट साहिब बताते हैं कि यह वह जगह है जहाँ हकीकत फिल्म की शूटिंग की गई थी । मैं हकीकत के फौजी नायक बलराज साहनी को यूनिफॉर्म में देखती हूँ और भीष्म साहनी को याद करती हूँ । लगा इस सुनसान में हकीकत का शेर किसी चोटी के पीछे से अब भी दहाड़ रहा है । रोवर के पहिए चढ़ाई को माप रहे हैं और साथ-साथ दौड़ रही हैं काली-भूरी पर चट्टानें । आँखें वीराना देख-देख परेशानी से ऊँघने लगीं । गला सूखने लगा । दो चार पानी के घूँट लिए । बस इतना ही । पानी है बेशकीमती । एक लंबी चढ़ाई के बाद टिन की छतवाला लंबा शेड । जरूर कोई सरकारी गोदाम होगा ।

चढ़ाई में कई मोड़ । पथरीले नंगे पहाड़ों की शृंखलाएँ । लेह की पीठ का पठार है खारदूलांग । खारदूलांग जिसे खरदूला भी कहते हैं । हिम-मंडित ग्लेशियर है । लेह के पिछवाड़े से निकलते ही पहाड़ों के हलके रंग गहरे होने लगते हैं । भूरे, ग्रे और स्लेटी पहाड़ों को आकाश की नीलाहटें अजीब पथरीलेपन में दमकाने लगती हैं । इतनी ऊँचाई पर किरणें ऐसे चमकती हैं कि अपनी गर्मी से बर्फीली नदी-नालों के पानी को सोख लेती हैं और पानी का गीलापन धूप की तेजी से भाप बनकर उड़ता चला जाता है ।

चढ़ाई पर धीमी चाल से गाड़ी आगे सरकने लगी है । गाड़ी लगभग सड़क के किनारे है । मैं नीचे की ओर देखने में झिझकती हूँ कि अगर इतने ऊँचे से गिरे तो होगा पूर्णविराम । अगले मोड़ पर आसमान पर जड़ा एक सीमेंट का दरवाजा नजर आया । जी हाँ, अब हम इसी में से गुजर कर ऊपर जा रहे हैं । वह रहा हिमशिखर खारदूलांग । बर्फ का पहाड़ । पहाड़ पर ताजा बर्फ नहीं - कड़ी बर्फ का पहाड़ है । बर्फ.. बर्फ.. बर्फ इसे कहते हैं ग्लेशियर । धूप चमका रही है इसकी धवलता को । ऊपर हेलीकॉप्टर मँड़रा रहे हैं और वायरलेस के खंभों पर लहरा रही हैं बौद्ध पताकाएँ । गाड़ी से उतर मैं बर्फ पर चल रही हूँ । बर्फ पर चलते हुए फिसलन है ।

मैंने जूते उतार लिए हैं । मोजे पहने-पहने ही सँभलकर चल रही हूँ । टूरिस्ट साहिब कहते हैं, आइए आपको एक चट्टान दिखाते हैं जो बर्फ से ढँकी है । उसके नीचे पथरीला खेत है । यहाँ एक न एक कैलेंडर देवी-देवताओं का टँगा रहता है । वैसे यहाँ के तूफानी अंधड़ में तो कार भी उड़ सकती है, कैलेंडर कैसे टिके रहते हैं - यह अचरज ही है । यहाँ से गुजरने

धर्मवीर भारती द्वारा लिखित 'ठेले पर हिमालय' यात्रावर्णन पढ़िए ।

किसी यात्रा पर जाने के लिए आरक्षण संबंधी जानकारी प्राप्त करने हेतु राज्य के पर्यटन विभाग को पत्र लिखिए ।

वाले सभी सैनिक जवान उसके आगे सिर झुकाते हैं ।

मोजे पहने-पहने वहाँ पहुँची तो चट्टान बर्फ-सी सर्द । चट्टान की खोल में दो कैलेंडर माँ दुर्गा और लक्ष्मी के, बर्फ में ही खोंसे हुए हैं । खारदूलांग की तेज हवाओं में न जाने कैसे टिके हैं । हमने विस्मय से कहा, ''यह तो हवा से उड़ जाते होंगे ।'' ''हाँ, ऐसा होता है तो हमारे जवान नया कैलेंडर लगा देते हैं,'' टूरिस्ट साहिब बोले ।

मैं पहले बर्फ पर दौड़ती हूँ फिर फिसलने के डर से वहीं कहीं बैठ जाती हूँ । टूरिस्ट साहिब कहते हैं, ''मैम, आप चाहें तो कार में बैठें ।''

''नहीं, मैं यहाँ पहुँच सकी हूँ, यह मेरे लिए मूल्यवान है ।''

लहराती-चमकती धूप में लहरा रही हैं पताकाएँ-पताकाएँ ।

टूरिस्ट साहिब से पूछा - ''ये पताकाएँ कैसी हैं ?''

इधर आते-जाते लोग मन में कुछ धार लेते हैं और खंभों पर पताकाएँ फहराते हैं । यह बात तो मुझे भी आपको बतानी चाहिए थी । मैं मन में कुछ भी न धरूँ तो भी इस ऊँचाई पर पताका तो फहराना चाहती हूँ। मुझे इस बात को सोच-सोच कर परेशानी हो रही है, इतनी कि लगता है इसके लिए दोबारा आना होगा ।

हम तीनों ने खाने के पैकेट खोले । ड्रीमलैंडवाले पैकेट में वही और उतना ही है जितना टूरिस्ट साहिब और ड्राइवर साहिब के पैकेटों में हैं । तीन पराठे और तीन-तीन आमलेट । देखकर हम तीनों हँसे ।

इसे ही कहते हैं बराबरी और इसे ही कहते हैं लद्दाख ।

पताकाएँ फिर नजर आईं । मैंने अपनी शॉल उतारी । मन में तय किया कि मैं इसे यहाँ लहराकर ही जाऊँगी । ऐसा न हुआ तो मुझे एक बार फिर वहाँ आना होगा । मैंने शॉल आगे किया - ''लीजिए, ड्राइवर साहिब इसे किसी भी तरह खंभे पर फहरा दें ।''

''मैम गर्म शॉल भारी है, टिकेगा नहीं । हवा से नीचे गिर जाएगा ।''

''कोई बात नहीं, गिरेगा भी तो इसी बर्फीले ग्लेशियर पर । उज्ज्वल बर्फ पर ।'' सुनकर दोनों हँसे - ''आप ऐसा करेंगी ही तो शॉल उठाने के लिए हमें फिर यहाँ आना पड़ेगा ?''

मैं पताका को लेकर गंभीर थी । मैंने सुनहरी गोटवाली हल्की-फुल्की ओढ़नी उन्हें पकड़ा दी और शॉल ओढ़े इंतजार करने लगी कि कब वह पताका बनकर ऊपर पहुँचे । ड्राइवर साहिब ने ऊँची छलाँग भरी और देखते-देखते मेरी झूठ-मूठ की पताका तारों में उलझकर लहराने लगी ।

मैंने गहरे भाव से खारदूलांग को सलाम किया । मुमकिन हुआ तो फिर आऊँगी । नहीं तो अब यहाँ इस बर्फीले ग्लेशियर पर पहुँच जाना मेरा सौभाग्य।

जीप उतराई से नीचे उतरती गई । एक मोड़ से ठीक बाएँ हाथ पर छोटे-से जलस्रोत को देख वहाँ रुकी । उसके किनारे जमी चट्टान पर जा बैठी । पहले

श्रवणीय

किसी दर्शनीय स्थल का वर्णन सुनिए तथा सुनते समय मुद्दों का आकलन कीजिए ।

तो उस ठंडे सर्द बर्फीले पानी की ओक भरी और जी भर कर मुँह पर छींटें दिए। पानी पिया और फिर उसमें पाँव डालने को हुई, पर अपने को रोक लिया। इतने ठंडे जल में पाँव नहीं। कुछ देर और काश कुछ देर और बैठ सकती !

एक और खयाल कौंधा। पन्ने पर यह लिखकर ग्लेशियर पर लटका दिया होता कि 'हिमराज आपने अपनी सबसे निकट धरती पर रहने वाली संतानों के लिए भला जल प्रदान करने में इतनी मितव्ययिता क्यों बरती। आप तो जल के स्रोत हैं।'...

रात एकाएक नींद खुली। लगा, कमरें में किसी ने टॉर्च फेंकी हो। खिड़की से अंदर आती चाँदनी का प्रकाश था। इतना स्वच्छ कि ऊपर ओढ़े हुए कंबल के अलग-अलग रंग दिखने लगे। आकाश खिड़की को घेरे है और काँच पर झुका है चाँद का मुखड़ा।

भला मैं आज ही यहाँ से क्यों चली जा रही हूँ। मेरा दिल्ली पहुँचना जरूरी न होता तो दिन के बाद पैगकोग झील देखती।

करवट लेने को थी कि उठकर खड़ी हो गई। सोने को तो प्लेन में भी सोया जा सकता है। घड़ी देखी साढ़े तीन। शॉल ओढ़ा। टॉर्च ली और कमरे के कपाट भिड़ा दिए और सीढ़ियों से नीचे उतर गई। खुले में टहलते हुए सोचने लगी। अपने में गहरा पारदर्शी सन्नाटा जैसे वह ऊपर के सितारों की लौ में अपने अँधरे में जगमगा रहा हो। नीचे दिल्ली में अपने जीने की दुनिया से अलग वह चाँद, वह तारे, यह धरती और सामने 'बिजी सर्किट हाउस' की ओर आती सड़क जैसे धरती को आकाश से मिलाने वाली पगडंडी हो। उस पर भी क्यों न चल लिया जाए लेह कि इस प्रभात बेला में।

फाटक खोलने के लिए हाथ बढ़ाया। घड़ी देखी। कुछ देर रुकना ठीक होगा। मैं अब सड़क पर चल रही हूँ। लेह को घेरे हुए पथरीली, शृंखला को देख रही हूँ। खामोशी में अपने पैरों की आहट सुन रही हूँ। अंतर में ऐसा भास रहा है कि इस अमृत बेला में जो घट रहा है वह पहली बार है और शायद अंतिम भी।

याद हो आई बौद्ध प्रवचनों की दो पंक्तियाँ - 'जो भी देखो, ऐसे देखो जैसे जीवन में पहली बार देख रहे हो। फिर ऐसे देखो जैसे जीवन में अंतिम बार देख रहे हो।'

वही।

बुद्ध के कमंडल में उदय होती उषा को मानो पहली बार देख रही हूँ - देख रही हूँ अंतिम बार भी जैसे हिमालय के पीछे से फैलाए लालिमा को हमारे पूर्वजों ने देखा था। स्थल पर सिर्फ चट्टाने, ऊँचे पहाड़ और आकाश की ओर जाती चढ़ाई के अलावा और कुछ नहीं।

('लेह-लद्दाख' से)

—०—

'प्रकृति मनुष्य की मित्र है' अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

'सुसंगति का फल' इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

शब्द संसार

हिममंडित (वि.सं.) = बर्फ से शोभित
मितव्ययिता (वि.सं.) = किफायती, थोड़ा या कम खर्च करने की
लक्ष्य (पुं.सं.) = निशाना
बेशकीमती (वि.सं.) = अमूल्य
आँच (स्त्री.सं.) = गरमी, ताप

पाठ से आगे

भारत के मानचित्र में बर्फाच्छादित प्रदेशों को अंकित कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :–

(क) संजाल पूर्ण कीजिए :

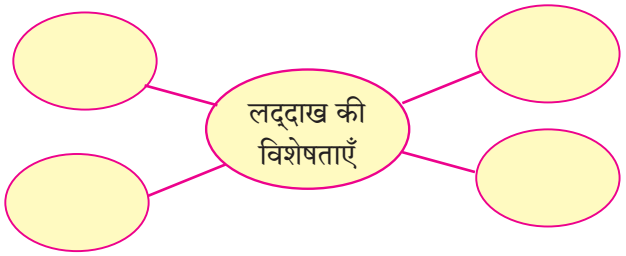

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :

१. चट्टानों के रंग

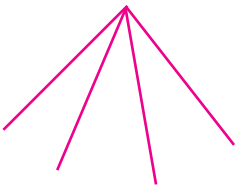

(ग) शब्दों के वचन पहचान कर परिवर्तन कीजिए एवं अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :–

१. शृंखलाएँ, ऋचा, पंक्ति, बर्फीला, दुकान, ज्योति, पट्टी

२. पहाड़, अनेक, गौ, कौआ, मनुष्य, तारा, आँख ।

(घ)

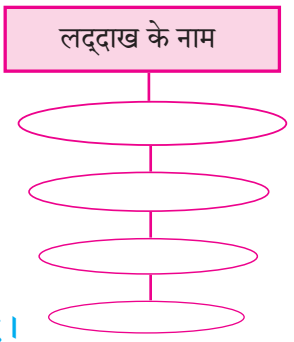

(२) पाठ में प्रयुक्त 'हिम' शब्दवाले दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए और अन्य दो शब्द भी लिखिए ।

स्वमत

किसी यात्रा स्थल पर जाते समय आई कठिनाइयाँ और उनके समाधान पर अपने विचार लिखिए ।

रचना बोध

.....

.....

.....

भाषा बिंदु

विरामचिह्न

(१) उचित विरामचिह्न लगाइए :–

१. पहले मैंने बगीचा देखा फिर मैं एक टीले पर चढ़ गया और वहाँ से उतरकर सीधा इधर चला आया

२. वाह उसने तो तुम्हें अच्छा धोखा दिया

३. भक्तिकाल में दो धाराएँ थीं सगुण धारा, निर्गुण धारा

४. पराधीन को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता

५. होनहार बिरवान के होत चीकने पात

६. दृश्य ३ रानी सिंहासन पर बैठी थी सेवक का प्रवेश

७. ऐसा एक भी मनुष्य नहीं जो संसार में कुछ न कुछ लाभकारी कार्य न कर सकता हो

८. सूर्य अस्त हुआ आकाश लाल हुआ वराह पोखरों से उठकर घूमने लगे हिरन हरियाली पर सोने लगे और जंगल में धीरे धीरे अँधेरा फैलने लगा

९. द्रव्य उपादान कारण शक्कर से मिठाई बनाई जाती है

१०. अनुवादित अनूदित ग्रंथ कुटीर

विलोम उपसर्ग

(२) शब्द बनाइए, विग्रह कीजिए तथा विलोम शब्द लिखिए :–

क्र.	विग्रह	शब्द	विलोम
१.	अति + अधिक		× न्यूनतम
२.	+	अनुज	×
३.	अप + कीर्ति		×
४.	+	सद्गुण	×
५.	+	प्रत्यक्ष	×
६.	उत् + नति		×
७.	+	उत्थान	×
८.	+	अपमान	×
९.	दुः + भाग्य	.....	×
१०.	+	दुर्लभ	×
११.	सम् + मान	.....	×
१२.	+	अभ्युत्थान	×